Handout PDF study material 11th (Bharatiya Gayikaon me bejor – Lata manges

 **कक्षा-11वीं, विषय- हिन्दी(केंद्रिक)**

 **पूरक पाठ्य-पुस्तक – वितान (भाग-1)**

 **अध्याय -1**

 **पाठ- भारतीय गायिकाओं में बेजोड़- लता मंगेशकर**

 **लेखक – कुमार गंधर्व**

 **प्रस्तुतकर्ता**

 **मिथिलेश कुमार झा**

 **पीजीटी –हिन्दी**

 **पऊकेवि-4, रावतभाटा**

 **लेखक (कुमार गंधर्व) का परिचय**

जन्म - पंडित कुमार गंधर्व का जन्म सन 1924 में सुलेभावि ,जिला बेलगांव (कर्नाटक) में हुआ था ।

मूल नाम- इनका मूल नाम ‘शिवपुत्र साढिदारमैया कामकली’ था ।

विशेषता- दस वर्ष की उम्र से गायकी की मंचीय प्रस्तुति करने वाले कुमार गंधर्व के संगीत की मुख्य विशेषता मालव लोक धुनों और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सुंदर सामंजस्य है,जिसका अद्भुत नमूना कबीर के पदों का उनके द्वारा गायन है ।

योगदान- उन्होंने लोक में रचे बसे लुप्तप्राय पदों का संग्रह कर और उन्हें स्वरों में बांधकर अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी ।

निधन- सन 1992 में इनका निधन हो गया ।

 भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लतामंगेशकर

 पाठ का मूलभाव

स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर के गानपन के बहाने लेखक ने शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत अर्थात फिल्मी संगीत के संबंधों पर अपना मत प्रकट किया है।

संगीत जिंदगी को लय देता है , ताजगी देता है, हर मोड़ पर आने वाले उतार- चढ़ाव पर से जूझने की ताकत देता है और मन को उन्मुक्त करता है । संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर एक ऐसा नाम है , एक ऐसा सुर है , जिसने एक महान शास्त्रीय गायक को कलम उठाने पर विवश कर दिया ।

मूल हिन्दी में लिखी गई यह रचना , भाषा की सांगीतिक धरोहर है । यह एक ऐसी परख है , जो न शास्त्रीय है और न सुगम । बस एक संगीत है , गानपन की पहचान है।

 पाठ का शब्दार्थ

रीति=प्रकार, मुग्ध शृंगार=मन को रिझाने वाला प्रेम, द्रुत लय= तेज धुन,

उत्कटता=व्यग्रता, जलद लय=तेज धुन, परिष्कृत=संवरा हुआ, लोच=स्वरों का बारीक प्रयोग ।

महफिल=सभा, सुभाषित=सूक्ति, त्रिवेणी संगम=तीन धाराओं का मेला,

रंजक=दिल को लुभाने वाला, नीरस=रस हीन ।

अवलंबित=टिकी हुई, सुसंवाद साधना=आपस में तालमेल बैठाना, तैल चित्र= तेलीय रंगों से बनाया हुआ चित्र, रसोत्कटता=रस से सारोबार होना, वृत्ति=भावना, कर्मकाण्ड=कार्यविधि,अभिजात्य=कुलीन वर्ग से संबंधित ।

तंत्र=तरीका, कौतुक=खेल, रूक्ष=रूखा, पर्जन्य=बादल, समाविष्ट= समाया हुआ, अलक्षित=जिसकी ओर ध्यान न गया हो, अनभिषिक्त=जिसे तिलक न किया गया हो, अदृष्टि पूर्व= जिसे पहले कहीं देखा न गया हो, अबाधित= बेरोकटोक, प्रभुत्व= अधिकार ।

 भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लतामंगेशकर पाठ का सारांश

लता : एक विलक्षण गायिका – लेखक कुमार गंधर्व कहता है कि बरसों पहले जब वह बीमार था,तब एक दिन उसे रेडियो पर एक अद्वितीय स्वर सुनाई दिया। यह स्वर उसके अन्तर्मन को छू गया । गाना समाप्त होने पर गायिका का नाम लता मंगेशकर बताया गया । नाम सुनकर वह हैरान रह गया । लेखक को प्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी का दूसरा रूप उनकी बेटी की कोमल आवाज में सुनने को मिला । लता से पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहां का चित्रपट संगीत में अपना दबदबा था,परंतु लता उससे आगे निकाल गई। कला के क्षेत्र में ऐसे चमत्कार बहुत ही कम होते हैं ; जैसे प्रसिद्ध सितार वादक विलायत खां अपने सितार वादक पिता की तुलना में बहुत आगे निकल गए थे ।

 लेखक का मानना है कि लता के बराबर की गायिका कोई नहीं हुई । लता ने चित्रपट संगीत को अत्यधिक लोकप्रिय बनाया । आज बच्चों के गाने का स्वर बदल गया है। यह सब लता के कारण संभव हुआ है । चित्रपट संगीत के विविध प्रकारों को आम आदमी समझने लगा है तथा गुनगुनाने लगा है । लता ने नई पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया है तथा आदमी में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में योगदान दिया है ।

लता के स्वर में गानपन - शास्त्रीय गान और लता के गान में से लोग लता के गान को ही अधिक पसंद करते हैं । इसका कारण लता का गानपन,उनका सुरीलापन एवं मस्त करने वाला स्वर है । श्रोता को रागों से नहीं , सुमधुर गानपन से मतलब होता है । यह गानपन लता के स्वर में शत–प्रतिशत है । यही लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म भी है ।

लता तथा नूरजहां की गायकी में अंतर – नूरजहां की गायकी में जहाँ एक मादक उत्तान (नशीली ऊँची तान ) होती थी, वहीं लता के स्वर में एक निर्मलता होती है । उनमें कोमलता और मुग्धता का संगम है , मानो उनका निजी जीवन उनके स्वर में झलक उठा है । यह अलग बात है कि संगीत–दिग्दर्शकों ने उनकी इस कला का भरपूर उपयोग नहीं किया । लता के गाने में एक प्रकार का नादमय उच्चार है । उनके गीत के दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप से भर जाता है । ऐसा लगता है, मानो दोनों शब्द एक-दूसरे में विलीन हो गए हैं । लता की यह विशेषता अनुपम है । लोग कहते हैं कि लता ने करुण रस के गाने बहुत अच्छे गाये हैं । लेखक का मत इसके विपरीत है । उसके अनुसार, लता ने मुग्ध शृंगार के गाने मध्य ओर द्रुत लय में बहुत अच्छे गाए हैं । लेखक का मानना है कि संगीत-दिग्दर्शकों ने उनसे ऊंची पट्टी में गवा कर उनके साथ अन्याय किया है ।

शास्त्रीय संगीत ओर चित्र-पट (फिल्मी)संगीत- लेखक का मानना है कि शास्त्रीय संगीत व चित्रपट संगीत में तुलना करना निरर्थक है । शास्त्रीय संगीत में गंभीरता स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत में तेज़ी, लय व चपलता प्रमुख होती है । चित्रपट संगीत में ताल प्राथमिक अवस्था का होता है और शास्त्रीय संगीत में इसका परिष्कृत रूप होता है । चित्रपट संगीत में आधे तालों, आसान लय सुलभता व लोच की प्रमुखता आदि विशेषता होती हैं । चित्रपट संगीत गायकों को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी अवश्य होनी चाहिए । लता के पास यह ज्ञान भरपूर है। लता के तीन-साढ़े-तीन मिनट के गान और तीन-साढ़े-तीन घंटे की शास्त्रीय महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक जैसा है ।

गायकी में लता का स्थान- उनके गानों में स्वर लय व शब्दार्थ का संगम होता है । गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता (रिझाने की शक्ति ) पर आधारित होती है और रंजकता का संबंध रसिक को आनंदित करने के सामर्थ्य से है । लता का स्थान अव्वल दर्जे के खानदानी गायक के समान है । किसी ने पूछा कि क्या लता शास्त्रीय गायकों की तीन घंटे की महफिल जमा सकती हैं ? लेखक उसी से प्रश्न करता है कि क्या कोई प्रथम श्रेणी का शास्त्रीय गायक तीन मिनट में चित्रपट का गाना इतनी कुशलता और रसोत्कटता ( रस से भरपूर ) से गा सकेगा ? शायद नहीं । खानदानी गवैयों ने चित्रपट संगीत पर लोगों के कान बिगाड़ देने का आरोप लगाया है । लेखक का मानना है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान सुधारे हैं ।

चित्रपट (फिल्मी) संगीत का महत्व – लेखक का मत है कि शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्ट प्राणी है । उन्होंने शास्त्र-शुद्धता को कर्मकाण्ड की तरह तूल दे रखी है, जबकि चित्रपट संगीत ने अभिजात्य संगीत को लोगों तक पहुंचाया है । आज लोगों को शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना नहीं , बल्कि सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए। चित्रपट संगीत का लचकदार होना ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है । चित्रपट संगीत की मान्यताएं , झंझटें और चुनौतियां अलग तरह की हैं । यहां नव निर्माण की संभावनाएं भी बहुत हैं । बड़े-बड़े संगीतकार शास्त्रीय रागदारी का , लोकगीतों की धुनों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं । वे धूप की तरह कौतुक करने वाले पंजाबी लोकगीतों का, बादल की तरह घुमड़ते राजस्थानी लोकगीतों का, घाटियों में गूँजते पहाड़ी लोकगीतों का, ऋतु चक्रों का, खेती से संबंधित कृषि गीतों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं । वास्तव में, चित्रपट संगीत का दायरा बहुत बड़ा है।

उसमे अनेक अलक्षित (जिसकी ओर ध्यान न गया हो) प्रयोग करने की गुंजाइश बनी हुई है ।

लता : चित्रपट संगीत की समाग्री- लता, चित्रपट संगीत की अनभिषिक्त (बेताज) समाग्री हैं । अनेक गायक-गायिकाओं की तुलना में उनकी लोकप्रियता सबसे अधिक है । लगभग आधी शताब्दी से वे जन-मन पर छाई हुई हैं । यह एक चमत्कार है, जिसे हम प्रत्यक्ष अपनी आँखों से अपने इर्द-गिर्द होता हुआ देख रहे हैं ।